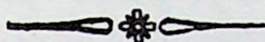
चतुर्विंशतिगायत्री

गायत्री वेदजननी गायत्री पापनाशिनी । गायत्र्यास्तु परं नास्ति दिवि चेह च पावनम् ॥



॥ श्रीः ॥

चतुर्विंशतिगायत्री ।



विद्यावारिधि-पण्डित-ज्वालाप्रसादमिश्रविरचित--

भाषाटीकासमेता ।



खेमराज श्रीकृष्णदास
प्रकाशन
बम्बई

संस्करण- सन् १९९८ सम्वत् २०५५

मूल्य ५ रुपये मात्र

Printed by Shri Sanjay Bajaj for M/s Khemraj Shrikrishnadass proprietors Shri Venkateshwar press Mumbai 400 004. at their Shri Venkateshwar press, 66, Hadapsar Industrial Estate, Pune-411013.

प्रस्तावना



(सिर्फ दो शब्द)

या चिन्ता भुवि पुत्रपौत्रभरणव्यापारसंरक्षणे
या चिन्ता धनधान्यभोगयशसां लाभे सदा जायते ।
सा चिन्ता यदि वेदमातृचरणाम्भोजे क्षणेऽहैतुकी
का चिन्ता यमराजभीमसदनद्वारप्रयाणे नृणाम्॥ १॥
आगच्छ वरदे देवि त्रिपदे ब्रह्मवादिनि ।
गायत्रि च्छन्दसां मातर्ब्रह्मयोने नमोऽस्तु ते ॥ २ ॥

भारतका ऐसा कौन आस्तिक हिन्दु होगा जो सावित्री गायत्रीके परम पुनीत महत्त्व तथा प्रभावको न जानता हो घोर जड़वादी कलियुगके लिये आशीर्वाद और तत्त्वज्ञानियोंके लिये मोक्षप्रदायिनी गायत्री मानवीय हृदयकी दुर्बलताओंको मिटाती है. भीषण कष्टके समय अपने उपासकोंके लिये संकट कवच बनती है । ऐसी ही चौबीस गायत्रियां इस छोटीसी पुस्तकमें सम्मिलित की गई हैं. इनमें ब्रह्मगायत्री भी सम्मिलित है. समूचे देशमें शास्त्रानुसार चौबीस गायात्रियोंका वर्णन पाया जाता है, किन्तु सबका शुद्ध संग्रह किसी भी पुस्तकमें एकत्रित नहीं मिलता। अतः पूज्य पिता "विद्यावारिधि

पं० ज्वालाप्रसादजी मिश्र" ने अपने व्यावहारिक ज्ञान और अनुभवसे इन गायत्रियोंके प्रचण्ड प्रताप और उनकी शक्तिका साक्षात् अनुभव किया और सबके कल्याणके लिये उन्होंने इन चौबीसों महामंत्र गायत्रियोंको विशद वैदिक व्याख्या सहित सम्पादन किया।

इस ब्रह्मतेजमयी गायत्रीके महत्त्वपूर्ण अर्थको समझकर जप करनेवाले पुरुष सच मुच त्रिविध कष्टोंको वीरतापूर्वक निवारण कर सकते हैं।

हम इस छोटेसे संग्रहके लिये अधिक कुछ न कहकर केवल इतनाही कहेंगे कि, इसका एक मात्र पाठही ब्रह्मतेज-प्रदायक है।

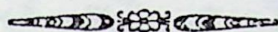
इस बार इस नवीन संस्करणमें भाषा और भी सरल तथा शुद्ध कर दीगई है कि, जिससे अल्पज्ञानवाले भी भली प्रकार समझ सकें।

बम्बई.	अनुगृहीत—
आश्विन शु० द्वितीया नवरात्र	जगदीशप्रसाद मिश्र,
२४।९।३०	दीनदारपुरा, मुरादाबाद।

श्रीमते रामानुजाय नमः ।

चतुर्विंशतिगायत्री ।

भाषाटीकासमेता ।



श्रीगणेशाय नमः ।

अथ ब्रह्मगायत्री ।

ॐ उत्तिष्ठंतु महाभूता ये भूता भूमिपालकाः॥ भूतानामविरोधेन ब्रह्मकर्म समाचरेत् ॥ आवाहयाम्यहं देवीं गायत्रीं सूर्यमण्डलात् ॥ आगच्छ वरदे देवि त्र्यक्षरे ब्रह्मवादिनि ॥ गायत्रि च्छंदसां मातर्ब्रह्मयोने नमोऽस्तु ते ॥ इत्यावाहनम् ॥ अथ वसिष्ठशापमोचनमंत्रः-ॐ अस्य श्रीवसिष्ठशापमोचनमंत्रस्य वसिष्ठ ऋषिरनुष्टुप्छंदः श्रीविष्णुर्देवता वसिष्ठशापमोचनार्थे जपे विनियोगः ॥ अहो महानुभावे बहुरूपे दिव्ये सिद्धे सरस्वति ॥ अजरे

अमरे चैव वसिष्ठशापमुक्ता भव ॥ अथ कर-न्यासः—ॐ वाक् वाक् ॥ ॐ प्राणः प्राणः ॥ ॐ चक्षुश्चक्षुः ॥ ॐ श्रोत्रं श्रोत्रम् ॥ ॐ उदरे ॥ ॐ ललाटे ॥ ॐ नाभौ ॥ ॐ हृदि ॥ ॐ कंठे ॥ ॐ शिरसि ॥ ॐ शिखायाम् ॥ ॐ कवचम् ॥ अथ ब्रह्मगायत्री—ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ॥ अथ करन्यासः—ॐ भूः अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ भुवः तर्जनीभ्यां नमः ॥ ॐ स्वः मध्यमाभ्यां नमः ॥ ॐ तत्सवितुर्वरेण्यम् अनामिकाभ्यां नमः ॥ ॐ भर्गो देवस्य धीमहि कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ॐ धियो यो नः प्रचोदयात् करतलकर-पृष्ठाभ्यां नमः ॥ अथ हृदयादिन्यासः—ॐ भूः हृदयाय नमः ॥ ॐ भुवः शिरसे स्वाहा ॥ ॐ स्वः शिखायै वषट् ॥ ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं कवचाय हुम् ॥ ॐ भर्गो देवस्य धीमहि नेत्र

त्रयाय वौषट् ॥ ॐ धियो यो नः प्रचोदयात् अस्त्राय फट् ॥ अथाक्षरन्यासः—ॐ तत् पादयोः ॥ ॐ सवितुर्जंघयोः ॥ ॐ वरेण्यं कटिदेशे ॥ ॐ भर्गो नाभौ ॥ ॐ देवस्य हृदये ॥ ॐ धीमहि कण्ठे ॥ ॐ धियो नासाग्रे ॥ ॐ यो नेत्रयोः ॥ ॐ नः ललाटे ॥ ॐ प्रचोदयात् शिरसि ॥ ॐ भूः ॥ ॐ भुवः ॥ ॐ स्वः ॐ ॥ महः ॥ ॐ जनः ॥ ॐ तपः ॥ ॐ सत्यम् ॥ ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ॥ इति मंत्रः ॥ ॐ आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वः॥ अथ पुनर्मंत्रः—ॐ क्लीं श्रीब्रह्मस्वरूपाय नमः ॥ इति ब्रह्मगायत्री ॥ १ ॥

अथ ब्रह्मगायत्री ।

अथ आवाहनम्—जो प्राणी भूमिके पालनेवाले हैं वे उठैं, प्राणियोंके अविरोधसे ब्रह्मकर्मका आचरण

करना चाहिये, देवी गायत्रीको मैं सूर्यमण्डलसे आवाहन करता हूं, हे ब्रह्मवादिनी देवी वरदायक ! आओ, गायत्री छन्दोंकी माता ब्रह्मकी अधिष्ठान तुमको प्रणाम करता हूं। इति आवाहन ॥ अब वसिष्ठके शापमोचनका मंत्र कहते हैं–इस वसिष्ठशापमोचन मंत्रके वसिष्ठ ऋषि, अनुष्टुप् छन्द, विष्णु देवता हैं, वसिष्ठशापमोचनमें विनियोग है। ॐ अहो महानुभाववाली बहुरूपा दिव्य सिद्ध सरस्वति ! तुम अजर अमर होकर वसिष्ठजीके शापसे मुक्त हो। अब करन्यास कहते हैं–वाक् २ से वाणी, प्राण २ से नासिका, चक्षु २ से नेत्र, श्रोत्र २ से कान, उदर, ललाट, नाभि, हृदय, कण्ठ, शिर, शिखा, कवच ॐकारनाम लेकर यह स्थान स्पर्श करैं। अब ब्रह्मगायत्री कहते हैं–स्थावर जंगमोंको प्रगट करके प्रेरणा करनेवाले अत्यन्त प्रकाशयुक्त उस वरणीय (प्रार्थना करने योग्य) तथा सत्पुरुषोंसे निरन्तर ध्यान करने योग्य तथा उपासकोंके पाप नष्ट करनेवाले परमतेजका

हम ध्यान करते हैं, जो हमारी बुद्धियोंको श्रेष्ठ कर्ममें प्रेरणा करे, जो भूरादिलोक वा प्राण अपान व्यानका प्रकाशक है। अथ करन्यासः--ॐ भूःसे अंगुष्ठ, ॐ भुवःसे तर्जनी, ॐ स्वःसे मध्यमा, ॐ तत्सवितुर्वरेण्यंसे अनामिका, ॐ भर्गो देवस्य धीमहिसे कनिष्ठिका, ॐ धियो यो नः प्रचोदयात्‌से करतल और करपृष्ठ स्पर्श करे। अब हृदयन्यास कहते हैं-ॐ भूःसे हृदय, ॐ भुवःसे शिर, ॐ स्वःसे शिखा, ॐ तत्सवितुर्वरेण्यंसे कवच, ॐ भर्गो देवस्य धीमहिसे दोनों नेत्र और मस्तक स्पर्श करै, ॐ धियो यो नः प्रचोदयात्‌से हथेलीमें दो अंगुली ताडन करै। अब अक्षरन्यास कहते हैं-ॐ तत्‌से दोनों चरणोंको, ॐ सवितुःसे दोनों जंघाओंको, ॐ वरेण्यंसे कमर, ॐ भर्गोसे नाभि, ॐ देवस्यसे हृदय, ॐ धीमहिसे कण्ठ, ॐ धियोसे नासाका अग्रभाग, ॐ योसे दोनों नेत्र, ॐ नःसे ललाट, ॐ प्रचोदयात्‌से शिरको स्पर्श करै, फिर ॐ भूः ॐ

भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् । फिर गायत्रीमन्त्र पढै-ॐ तत्सवितुः इत्यादि । इति ब्रह्मगायत्री । मंत्रार्थ कहते हैं-ॐ-आपो ज्योति० वह ब्रह्म तेज जलस्वरूप है, ज्योतिःस्वरूप है, मोक्षस्वरूप है, ब्रह्मस्वरूप सृष्टिस्थितिप्रलयकारक ब्रह्मविष्णुरुद्रस्वरूप ॐकारस्वरूप है, उसका ध्यान करते हैं, फिर मन्त्र कहते हैं-ॐ क्लीं श्रीब्रह्मस्वरूपको प्रणाम है । इति ब्रह्मगायत्री ॥ १ ॥

अथ विष्णुगायत्री ।

ॐ विष्णुदेवाय विद्महे ॥ वासुदेवाय धीमहि ॥ तन्नो विष्णुः प्रचोदयात् ॥ ॐ विष्णुदेवाय अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ विद्महे तर्जनीभ्यां नमः ॥ वासुदेवाय मध्यमाभ्यां नमः ॥ धीमहि अनामिकाभ्यां नमः ॥ तन्नो विष्णुः कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ॐ विष्णुदेवाय हृदयाय नमः ॥ विद्महे शिरसे स्वाहा॥ वासुदेवाय शिखायै वषट् ॥ धीमहि कवचाय हुम् ॥

तन्नो विष्णुर्नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ प्रचोदयात् अस्त्राय फट् ॥ अथ विष्णुमंत्रः-ॐ उपेंद्राय अचिंत्याय नमः ॥ इति विष्णुगायत्री ॥ २ ॥

अथ विष्णुगायत्री ।

ॐ विष्णु देवताको जानते हैं, वासुदेवका ध्यान करते हैं, वह विष्णु हमारी बुद्धियोंको श्रेष्ठकार्यमें प्रेरणा करै । ॐ विष्णुदेवायसे अंगुष्ठ, विद्महेसे तर्जनी, वासुदेवायसे मध्यमा, धीमहिसे अनामिका, तन्नो विष्णुःसे कनिष्ठिका, प्रचोदयात्से करतल करपृष्ठ । ॐ विष्णुदेवायसे हृदय, विद्महेसे शिर, वासुदेवायसे शिखा, धीमहिसे कवच, तन्नो विष्णुःसे नेत्रत्रय, प्रचोदयात्से अस्त्र हथेलीपर दो अंगुली ताडन करै । अब विष्णुमन्त्र कहते हैं-ॐ उपेंद्र अचिन्त्यदेवके निमित्त प्रणाम है ॥ इति विष्णुगायत्री ॥ २ ॥

अथ शिवगायत्री ।

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे ॥ महादेवाय धीमहि ॥

तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥ ॐ तत्पुरुषाय अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ विद्महे तर्जनीभ्यां नमः ॥ ॐ महादेवाय मध्यमाभ्यां नमः ॥ ॐ धीमहि अनामिकाभ्यां नमः ॥ ॐ तन्नो रुद्रः कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ॐ प्रचोदयात् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ अथांगन्यासः—ॐ तत्पुरुषाय हृदयाय नमः ॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ ॐ महादेवाय शिखायै वषट् ॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥ ॐ तन्नो रुद्रः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ प्रचोदयात् अस्त्राय फट् ॥ अथ शिवगायत्रीमन्त्रः—ॐ सं सं सं ह्रीं ह्रीं शिवाय नमः ॥ पुनः—ॐ शिवाय नमः ॥ इति शिवगायत्री ॥ ३ ॥

अथ शिवगायत्री ।

ॐ तत्पुरुषको जानते हैं, महादेवका ध्यान करते हैं, वह रुद्र हमारी बुद्धियोंको सत्कार्यमें प्रेरणा करे ।

ॐ तत्पुरुषायसे अंगुष्ठ, विद्महेसे तर्जनी, महादेवायसे मध्यमा, धीमहिसे अनामिका, तन्नो रुद्रःसे कनिष्ठिका स्पर्श करै, प्रचोदयात्से करतलकरपृष्ठ स्पर्श करै । अथांग-न्यासः—ॐ तत्पुरुषायसे हृदय, विद्महेसे शिर, महा-, देवायसे शिखा, धीमहिसे कवच, तन्नो रुद्रःसे नेत्रत्रय प्रचोदयात्से अस्त्र हथेलीमें दो अंगुली ताडन करे । शिव-गायत्रीका मन्त्र यह है—ॐ सं सं सं ह्रीं ह्रीं शिवको प्रणाम है । फिर ॐ शिवको प्रणाम है ॥ इति शिवगायत्री ॥ ३॥

अथ रामगायत्री ।

ॐ दाशरथये विद्महे ॥ सीतावल्लभाय धीमहि ॥ तन्नो रामः प्रचोदयात् ॥ ॐ दाशरथये अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ विद्महे तर्जनीभ्यां नमः ॥ ॐ सीतावल्लभाय मध्यमाभ्यां नमः ॥ ॐ धीमहि अनामिकाभ्यां नमः ॥ ॐ तन्नो रामः कनि-ष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ॐ प्रचोदयात् करतलकर-

पृष्ठाभ्यां नमः ॥ अथांगन्यासः-ॐ दाशरथये हृदयाय नमः ॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ ॐ सीतावल्लभाय शिखायै वषट् ॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥ ॐ तन्नो रामः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ प्रचोदयात् अस्त्राय फट् ॥ अथ रामगायत्रीमंत्रः-ॐ ह्रीं ह्रीं रां रामाय नमः ॥ पुनः-ॐ जानकीतारकरामाय नमः ॥ इति रामगायत्री ॥ ४ ॥

अथ रामगायत्री ।

ॐ दशरथकुमारको जानते हैं, सीतावल्लभका ध्यान करते हैं, वह जगत्‌के रमानेवाले अथवा जिनमें जगत् रमता है वा जिनमें योगीजन रमण करते हैं वह हमारी बुद्धिको सत्कर्ममें प्रेरणा करै। ॐ दाशरथयेसे अंगुष्ठ, विद्महेसे तर्जनी, सीतावल्लभायसे मध्यमा, धीमहिसे अनामिका, तन्नो रामःसे कनिष्ठिका, प्रचोदयात्‌से करतलक० ॥ अथांगन्यासः-ॐ दाशरथयेसे हृदय,

विद्महेसे शिर, सीतावल्लभायसे शिखा, धीमहिसे कवच, तन्नो रामःसे नेत्रत्रय स्पर्श करै, प्रचोदयात् से हथेलीमें दो अंगुली ताडन करै। राम गायत्रीका मन्त्र यह है- ॐ ह्रीं ह्रीं रां रामाय नमः। रामको प्रणाम है तथा जानकी तारक रामको प्रणाम है। इति रामगायत्री ॥४॥

अथ लक्ष्मणगायत्री।

ॐ दाशरथये विद्महे ॥ अलबेलाय धीमहि ॥ तन्नो लक्ष्मणः प्रचोदयात् ॥ ॐ दाशरथये अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ विद्महे तर्जनीभ्यां नमः ॥ ॐ अलबेलाय मध्यमाभ्यां नमः ॥ ॐ धीमहि अनामिकाभ्यां नमः ॥ ॐ तन्नो लक्ष्मणः कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ॐ प्रचोदयात् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ अथांगन्यासः-ॐ दाशरथये हृदयाय नमः ॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ ॐ अलबेलाय शिखायै वषट् ॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥ ॐ

तन्नो लक्ष्मणः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ प्रचोदयात् अस्त्राय फट् ॥ अथ लक्ष्मणगायत्रीमन्त्रः—ॐ ह्रीं ह्रीं ॐ रों रों लक्ष्मणाय नमः ॥ इति लक्ष्मण-गायत्री ॥ ५ ॥

अथ लक्ष्मणगायत्री ।

दशरथकुमारको जानते हैं, अलबेलेका ध्यान करते हैं, वह लक्ष्मण हमारी बुद्धियोंको श्रेष्ठ कार्यमें प्रेरणा करै । ॐ दाशरथयेसे अंगुष्ठ, ॐ विद्महेसे तर्जनी, ॐ अलबेलायसे मध्यमा, ॐ धीमहिसे अनामिका, ॐ तन्नो लक्ष्मणःसे कनिष्ठिका, ॐ प्रचोदयात्से कर-तल । अब अंगन्यास कहते हैं—ॐ दाशरथयेसे हृदय, विद्महेसे शिर, अलबेलायसे शिखा, धीमहिसे कवच, तन्नो लक्ष्मणःसे नेत्रत्रय, ॐ प्रचोदयात्से अस्त्रप्रयोग करै । लक्ष्मणगायत्रीका मन्त्र—ॐ ह्रीं ह्रीं ॐ रों रों लक्ष्मणको प्रणाम है । इति लक्ष्मणगायत्री ॥ ५ ॥

अथ कृष्णगायत्री ।

ॐ देवकीनन्दनाय विद्महे॥ वासुदेवाय धीमहि॥ तन्नः कृष्णः प्रचोदयात् ॥ अथ करन्यासः–ॐ देवकीनन्दनाय अंगुष्ठाभ्यां नमः॥ ॐ विद्महे तर्जनीभ्यां नमः ॥ ॐ वासुदेवाय मध्यमाभ्यां नमः ॥ ॐ धीमहि अनामिकाभ्यां नमः ॥ ॐ तन्नः कृष्णः कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ॐ प्रचोदयात् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ अथांगन्यासः–ॐ देवकीनंदनाय हृदयाय नमः ॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ ॐ वासुदेवाय शिखायै वषट् ॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम्॥ ॐ तन्नः कृष्णः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ प्रचोदयात् अस्त्राय फट् ॥ अथ कृष्णगायत्रीमन्त्रः–ॐ क्लीं कृष्णाय नमः ॥ इति कृष्णगायत्री ॥ ६ ॥

अथ कृष्णगायत्री ।

ॐ दिव्यगुणवान् देवकीनंदनको जानते हैं, वासुदेवका ध्यान करते हैं (सर्वत्र व्यापक होनेसे वासु-

देव हैं) वह संसारसे निवृत्त करनेवाले भगवान् हमारी बुद्धियोंको सत्कार्यमें प्रेरणा करै । अब करन्यास कहते हैं—ॐ देवकीनन्दनायसे अंगुष्ठ, ॐ विद्महेसे तर्जनी, ॐ वासुदेवायसे मध्यमा, ॐ धीमाहिसे अनामिका, ॐ तन्नः कृष्णःसे कनिष्ठिका, ॐ प्रचोदयात्से करतलकरपृष्ठ स्पर्श कर प्रणाम करे । अब अंगन्यास कहते हैं-ॐ देवकी-नन्दनायसे हृदय, ॐ विद्महेसे शिर, ॐ वासुदेवायसे शिखा, ॐ धीमहिसे कवच, ॐ तन्नः कृष्णःसे नेत्रत्रय, ॐ प्रचोदयात्से अस्त्रमुद्रा करै । कृष्णगायत्रीमंत्र—ॐ क्लीं कृष्णके निमित्त प्रणाम है । इति कृष्णगायत्री ॥६॥

अथ नृसिंहगायत्री ।

ॐ नृसिंहाय विद्महे ॥ वज्रदंताय धीमहि ॥ तन्नो नृसिंहः प्रचोदयात् ॥ अथ करन्यासः—ॐ नृसिंहाय अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ विद्महे तर्जनीभ्यां नमः ॥ ॐ वज्रदंताय मध्यमाभ्यां नमः ॥ ॐ

धीमहि अनामिकाभ्यां नमः ॥ ॐ तन्नो नृसिंहः कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ॐ प्रचोदयात् करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः ॥ अथांगन्यासः—ॐ नृसिंहाय हृदयाय नमः ॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ ॐ वज्रदन्ताय शिखायै वषट् ॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥ ॐ तन्नो नृसिंहः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ प्रचोदयात् अस्त्राय फट् ॥ अथ नृसिंहगायत्री-मंत्रः—ॐ नृं नृं नृसिंहाय नमः ॥ इति नृसिंहगायत्री ॥ ७ ॥

अथ नृसिंहगायत्री ।

श्रीनृसिंहको जानते हैं, वज्रदन्तका ध्यान करते हैं, वह नृसिंहजी हमारी बुद्धियोंको श्रेष्ठकार्यमें प्रेरणा करैं । अब करन्यास कहते हैं—ॐ नृसिंहायसे अंगुष्ठ, विद्महेसे तर्जनी, वज्रदंतायसे मध्यमा, धीमहिसे अना-मिका, तन्नो नृसिंहःसे कनिष्ठिका, प्रचोदयात्से करतल-करपृष्ठ स्पर्श करके प्रणाम करे । अब अङ्गन्यास कहते हैं—

ॐ नृसिंहायसे हृदय, विद्महेसे शिर, वज्रदन्तायसे शिखा, धीमहिसे कवच, तन्नो नृसिंहःसे नेत्रत्रय, प्रचोदयात्से अस्त्र (हथेलीपर दो अंगुली प्रहार) करैं। नृसिंहगायत्रीका मंत्र कहते हैं–ॐ नृं नृं नृसिंहको प्रणामहै। इति नृसिंहगायत्री ॥ ७ ॥

अथ जलगायत्री।

ॐ जलबिंबाय विद्महे ॥ नीलपुरुषाय धीमहि ॥ तन्नो अंबु प्रचोदयात् ॥ अथ करन्यासः– ॐ जलबिंबाय अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ विद्महे तर्जनीभ्यां नमः ॥ ॐ नीलपुरुषाय मध्यमाभ्यां नमः ॥ ॐ धीमहि अनामिकाभ्यां नमः ॥ ॐ तन्नो अंबु कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ॐ प्रचोदयात् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ अथांगन्यासः–ॐ जलबिंबाय हृदयाय नमः ॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ ॐ नीलपुरुषाय शिखायै वषट् ॥ ॐ

धीमहि कवचाय हुम् ॥ ॐ तन्नो अंबु नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ प्रचोदयात् अस्त्राय फट् ॥ अथ जलगायत्रीमंत्रः—ॐ जं जं ॐ वं वं ॐ लं लं ॥ इति जलगायत्री ॥ ८ ॥

अथ जलगायत्री ।

जलबिम्बको जानते हैं, नीलपुरुषका ध्यान करते हैं, अम्बुदेवता सत्कर्ममें हमारी बुद्धिको प्रेरणा करे । अब करन्यास कहते हैं—जलबिम्बायसे अंगुष्ठ, विद्महेसे तर्जनी, नीलपुरुषायसे मध्यमा, धीमहिसे अनामिका, तन्नो अम्बुसे कनिष्ठिका, प्रचोदयात्से करतलकरपृष्ठ स्पर्शपूर्वक प्रणाम करे । अब अंगन्यास कहते हैं—ॐ जलबिम्बायसे हृदय, ॐ विद्महेसे शिर, ॐ नीलपुरुषायसे शिखा, ॐ धीमहिसे कवच, ॐ तन्नो अम्बुसे नेत्रत्रय, ॐ प्रचोदयात्से अस्त्रमुद्रा करै । जल गायत्रीका मन्त्र कहते हैं—ॐ जं जं ॐ वं वं ॐ लं लं ॥ इति जलगायत्री ॥ ८ ॥

अथ सूर्यगायत्री ।

ॐ भास्कराय विद्महे ॥ महातेजसे धीमहि ॥ तन्नः सूर्यः प्रचोदयात् ॥ अथ करन्यासः—ॐ भास्कराय अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ विद्महे तर्जनीभ्यां नमः ॥ ॐ दिवाकराय मध्यमाभ्यां नमः ॥ ॐ धीमहि अनामिकाभ्यां नमः ॥ ॐ तन्नः सूर्यः कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ॐ प्रचोदयात् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः । अथांगन्यासः—ॐ भास्कराय हृदयाय नमः ॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ ॐ दिवाकराय शिखायै वषट् ॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥ ॐ तन्नः सूर्यः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ प्रचोदयात् अस्त्राय फट् ॥ अथ सूर्यगायत्रीमंत्रः ॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः ॥ ॐ सूर्यविष्णुतेजसे ज्वालामणिकुंडलिने स्वाहा ॥

इति सूर्यगायत्री ॥ ९ ॥

अथ सूर्यगायत्री ।

प्रकाशकदेवके निमित्त जानकारी प्राप्त करते हैं, महातेजसका ध्यान करते हैं, वह सूर्यदेव हमारी बुद्धियोंको सत्कार्यमें प्रेरणा करै । अब करन्यास कहते हैं—ॐ भास्करायसे अंगुष्ठ, विद्महेसे तर्जनी, दिवाकरायसे मध्यमा, धीमहिसे अनामिका, तन्नः सूर्यःसे कनिष्ठिका, प्रचोदयात्से करतलकरपृष्ठ स्पर्श करै । अब अंगन्यास कहते हैं—ॐ भास्करायसे हृदय, विद्महेसे शिर, दिवाकरायसे शिखा, ॐ धीमहिसे कवच, ॐ तन्नः सूर्यःसे नेत्रत्रय, ॐ प्रचोदयात्से अस्त्रमुद्रा करे । अब सूर्यगायत्रीका मंत्र कहते हैं--ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः सूर्यदेव विष्णुके तेज ज्वाला मणिकुण्डल धारण करनेवालेके निमित्त स्वाहा ।

इति सूर्यगायत्री ॥ ९ ॥

अथाग्निगायत्री ।

महाज्वालाय विद्महे ॥ अग्निमथ्याय धीमहि ॥ तन्नो अग्निः प्रचोदयात् ॥ अथ करन्यासः—ॐ महाज्वालाय अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ विद्महे तर्जनीभ्यां नमः ॥ ॐ अग्निमथ्याय मध्यमाभ्यां नमः ॥ ॐ धीमहि अनामिकाभ्यां नमः ॥ ॐ तन्नो अग्निः कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ॐ प्रचोदयात् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ अथांगन्यासः—ॐ महाज्वालाय हृदयाय नमः ॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ ॐ अग्निमथ्याय शिखायै वषट् ॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥ ॐ तन्नो अग्निः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ प्रचोदयात् अस्त्राय फट् ॥ अथाग्निगायत्रीमंत्रः—ॐ अं अं अं ॐ ग्निं ग्निं ग्निं ॐ अग्निदेवाय नमः ॥ इत्यग्निगायत्री ॥ १० ॥

अथ अग्निगायत्री ।

महाज्वालासंयुक्तके निमित्त ज्ञान प्राप्त करते हैं, अग्नि

निरन्तर गमनशील वा सबमें व्यापकका ध्यान करते हैं, वह अग्नि हमारी बुद्धियोंको सत्कार्यमें प्रेरणा करे । अब करन्यास कहते हैं--ॐ महाज्वालायसे अंगुष्ठ, विद्महेसे तर्जनी, अग्निमथ्नायसे मध्यमा, धीमहिसे अनामिका, तन्नो अग्निःसे कनिष्ठिका, प्रचोदयात्से करतलकरपृष्ठ स्पर्श करै । अब अंगन्यास कहते हैं--ॐ महाज्वालायसे हृदय, विद्महेसे शिर, अग्निमथ्नायसे शिखा, धीमहिसे कवच, तन्नो अग्निःसे नेत्रत्रय, प्रचोदयात्से अस्त्र मुद्रा करै । अब अग्निगायत्रीमन्त्र कहते हैं--ॐ अं अं अं ॐ ग्निं ग्निं ग्निं ॐ अग्निदेवताके निमित्त प्रणाम है ॥ इत्यग्निगायत्री ॥ १० ॥

अथ पृथ्वीगायत्री ।

ॐ पृथ्वीदेव्यै विद्महे ॥ सहस्रमूर्तये धीमहि ॥ तन्नः पृथ्वी प्रचोदयात् ॥ अथ करन्यासः– ॐ पृथ्वीदेव्यै अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ विद्महे तर्जनीभ्यां नमः ॥ ॐ सहस्रमूर्तये मध्यमाभ्यां नमः ॥

ॐ धीमहि अनामिकाभ्यां नमः ॥ ॐ तन्नः पृथ्वी कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ॐ प्रचोदयात् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ अथांगन्यासः— ॐ पृथ्वीदेव्यै हृदयाय नमः ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ ॐ सहस्रमूर्तये शिखायै वषट् ॥ ॐ धीमहि कवचायहुम् ॥ ॐ तन्नः पृथ्वी नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ प्रचोदयात् अस्त्राय फट् ॥ अथ पृथ्वीगायत्रीमंत्रः—ॐ भूरसि भूरसि विश्वस्य धर्त्री भुवनस्य मध्ये च तुभ्यं नमः ॥ इति पृथ्वीगायत्री ॥ ११ ॥

अथ पृथ्वीगायत्री ।

ॐ पृथ्वीदेवीके निमित्त ज्ञानको प्राप्त करते हैं, सहस्रमूर्तिके निमित्त ध्यान करते हैं, वह पृथ्वीदेवी सत्कार्यमें हमारी बुद्धिको प्रेरणा करे । अब करन्यास कहते हैं— पृथ्वीदेव्यैसे अंगुष्ठ, विद्महेसे तर्जनी, सहस्रमूर्तयेसे मध्यमा, धीमहिसे अनामिका, तन्नः पृथ्वीसे कनिष्ठिका, प्रचो-

दयात्‌से करतलकरपृष्ठ स्पर्श करै । अब अंगन्यास कहते हैं--ॐ पृथ्वीदेव्यैसे हृदय, विद्महेसे शिर, सहस्रमूर्तयेसे शिखा, धीमहिसे कवच, तन्नः पृथ्वीसे नेत्रत्रय, प्रचोदयात्‌से अस्त्रमुद्रा करै । अब पृथ्वीगायत्री मंत्र कहते हैं--हे देवि! तुम सत्तारूप हो, संसारको धारण करनेवाली भुवनोंके मध्यमें विराजमान तुमको प्रणाम करते हैं ॥

इति पृथ्वीगायत्री ॥ ११ ॥

अथ नारायणगायत्री ।

ॐ नारायणाय विद्महे ॥ शेषशायिने धीमहि ॥ तन्नो नारायणः प्रचोदयात्‌ ॥ अथ करन्यासः--ॐ नारायणाय अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ विद्महे तर्जनीभ्यां नमः ॥ ॐ शेषशायिने मध्यमाभ्यां नमः ॥ ॐ धीमहि अनामिकाभ्यां नमः ॥ ॐ तन्नो नारायणः कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ॐ प्रचोदयात्‌ करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ अथांगन्यासः--ॐ नारायणाय हृदयाय नमः ॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥

ॐ शेषशायिने शिखायै वषट्॥ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥ ॐ तन्नो नारायणः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ प्रचोदयात् अस्त्राय फट् ॥ अथ नारायणगायत्री-मंत्रः--ॐ नं नारायणाय नमः ॥ पुनः ॐ श्रीमन्ना-रायणस्य चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥ श्रीमते नारायणाय नमः ॥ इति नारायणगायत्री ॥ १२ ॥

अथ नारायणगायत्री ।

कारण जलोंमें निवास करनेवाले नारायणका ज्ञान प्राप्त करते हैं, शेषशायीका ध्यान करते हैं, वह नारा-यण (धर्म, अर्थ, काम, मोक्षके दाता) हमारी बुद्धियोंको सत्कार्यमें प्रेरणा करे । अब करन्यास कहते हैं--ॐ नारायणायसे अंगुष्ठ, विद्महेसे तर्जनी, शेषशायिनेसे मध्यमा, धीमहिसे अनामिका, तन्नो नारा-यणःसे कनिष्ठिका, प्रचोदयात्से करतलकरपृष्ठ स्पर्श करै । अब अंगन्यास कहते हैं--ॐ नारायणायसे हृदय.

विद्महेसे शिर, शेषशायिनेसे शिखा, धीमहिसे कवच, तन्नो नारायणःसे नेत्रत्रय, प्रचोदयात्से अस्त्र प्रयुक्त करै। अब नारायणगायत्रीमन्त्र कहते हैं—ॐ नारायणके निमित्त नमस्कार है। अथवा श्रीमन्नारायणके चरणोंकी शरणमें प्राप्त होता हूं, श्रीमान् नारायणके निमित्त प्रणाम है। इति नारायणगायत्री ॥ १२ ॥

अथ हनुमद्गायत्री।

ॐ अंजनीगर्भाय विद्महे ॥ वायुपुत्राय धीमहि॥ तन्नो हनुमत् प्रचोदयात् ॥ अथ करन्यासः—ॐ अंजनीगर्भाय अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ विद्महे तर्जनीभ्यां नमः ॥ ॐ वायुपुत्राय मध्यमाभ्यां नमः ॥ ॐ तन्नो हनुमत् कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ॐ प्रचोदयात् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ अथांगन्यासः—ॐ अंजनीगर्भाय हृदयाय नमः ॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ ॐ वायुपुत्राय शिखायै

वषट् ॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥ ॐ तन्नो हनुमन्नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ प्रचोदयात् अस्त्राय फट् ॥ अथ हनुमद्गायत्रीमंत्रः–हाँ हीँ हूँ हैं हौं हः इति हनुमद्गायत्री ॥ १३ ॥

अथ हनुमद्गायत्री ।

अञ्जनीके गर्भसे प्रगट होनेवालेको जानते हैं, वायुपुत्रका ध्यान करते हैं, वह हनुमान् हमारी बुद्धियोंको सत्कार्यमें प्रेरणा करे । अब करन्यास कहते हैं–ॐ अञ्जनीगर्भायसे अंगुष्ठ, ॐ विद्महेसे तर्जनी, ॐ वायुपुत्रायसे मध्यमा, ॐ धीमहिसे अनामिका, ॐ तन्नो हनुमत्से कनिष्ठिका, ॐ प्रचोदयात्से करतलकरपृष्ठ स्पर्श करे । अब अंगन्यास कहते हैं–ॐ अंजनीगर्भायसे हृदय, विद्महेसे शिर, वायुपुत्रायसे शिखा, धीमहिसे कवच, तन्नो हनुमत्से नेत्रत्रय, प्रचोदयात्से अस्त्र प्रयुक्त करे । अब हनुमद्गायत्री मन्त्र कहते हैं–ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः ॥ इति हनुमद्गायत्री ॥ १३ ॥

अथ गरुडगायत्री ।

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे ॥ स्वर्णपक्षाय धीमहि ॥ तन्नो गरुडः प्रचोदयात् ॥ अथ करन्यासः-ॐ तत्पुरुषाय अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ विद्महे तर्जनीभ्यां नमः ॥ ॐ स्वर्णपक्षाय मध्यमाभ्यां नमः ॥ ॐ धीमहि अनामिकाभ्यां नमः ॥ ॐ तन्नो गरुडः कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ॐ प्रचोदयात् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ अथांगन्यासः-ॐ तत्पुरुषाय हृदयाय नमः ॥ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ ॐ स्वर्णपक्षाय शिखायै वषट् ॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥ ॐ तन्नो गरुडः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ प्रचोदयात् अस्त्राय फट् ॥ अथ गरुडगायत्रीमन्त्रः-ॐ ग्रां ग्रीं ग्रूं ग्रैं ग्रौं ग्रः ॥ इति गरुडगायत्री ॥ १४ ॥

अथ गरुडगायत्री ।

ॐ तत्पुरुषको जानते हैं, सुवर्णपक्षवाले पुरुषक

ध्यान करते हैं, वह गरुड हमारी बुद्धियोंको अच्छे काममें प्रेरणा करैं । अब करन्यास कहते हैं-ॐ तत्पुरुषायसे अंगुष्ठ, विद्महेसे तर्जनी, स्वर्णपक्षायसे मध्यमा, धीमहिसे अनामिका, तन्नो गरुडःसे कनिष्ठिका, प्रचोदयात्से करतलकरपृष्ठ स्पर्श करें । अब अंगन्यास कहते हैं-ॐ तत्पुरुषायसे हृदय, विद्महेसे शिर, स्वर्णक्षायसे शिखा, धीमहिसे कवच, तन्नो गरुडःसे नेत्रत्रय, चोदयात्से अस्त्र प्रयुक्त करै । गरुडगायत्रीका मन्त्र-ॐ थ्रां थ्रीं थ्रूं थ्रैं थ्रौं थ्रः ॥ इति गरुडगायत्री ॥ १४ ॥

अथ देवीगायत्री ।

ॐ देव्यै ब्रह्माण्यै विद्महे ॥ महाशक्त्यै धीमहि ॥ तन्नो देवी प्रचोदयात् ॥ अथ करन्यासः-ॐ देव्यै ब्रह्माण्यै अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ विद्महे तर्जनीभ्यां नमः ॥ ॐ महाशक्त्यै मध्यमाभ्यां नमः ॥ ॐ धीमहि अनामिकाभ्यां नमः ॥ ॐ तन्नो

देवी कनिष्ठिकाभ्यां नमः॥ ॐ प्रचोदयात् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ अथांगन्यासः—ॐ देव्यै ब्रह्माण्यै हृदयाय नमः ॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ ॐ महाशक्त्यै शिखायै वषट् ॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥ ॐ तन्नो देवी नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ प्रचोदयात् अस्त्राय फट् ॥ अथ देवीगायत्रीमन्त्रः—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमः सोऽहम् ॥ इति देवीगायत्री ॥ १९ ॥

अथ देवीगायत्री ।

दिव्यगुणयुक्त ब्रह्मशक्ति वा ब्रह्मरूपिणीको जानते हैं, महाशक्तिका ध्यान करते हैं, वह देवी हमको शुभ कार्योंमें प्रेरित करे। अब करन्यास कहते हैं—ॐ देव्यै ब्रह्माण्यैसे अंगुष्ठ, विद्महेसे तर्जनी, महाशक्त्यैसे मध्यमा, धीमहिसे अनामिका, तन्नो देवीसे कनिष्ठिका, प्रचोदयात्से करतलकरपृष्ठ स्पर्श करे। अब अङ्गन्यास-

कहते हैं—ॐ देव्यै ब्रह्माण्यैसे हृदय, विद्महेसे शिर, महाशक्त्यैसे शिखा, धीमहिसे कवच, ॐ तन्नो देवीसे नेत्रत्रय, प्रचोदयात्‌से अस्त्रमुद्रा करे। अब देवीगायत्रीका मंत्र कहते हैं—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमः सोऽहम् ॥ इति देवीगायत्री ॥ १५ ॥

अथ गोपालगायत्री ।

ॐ गोपीजनवल्लभाय विद्महे ॥ वासुदेवाय धीमहि ॥ तन्नो गोपालः प्रचोदयात् ॥ अथ करन्यासः—ॐ गोपीजनवल्लभाय अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ विद्महे तर्जनीभ्यां नमः ॥ ॐ वासुदेवाय मध्यमाभ्यां नमः ॥ ॐ धीमहि अनामिकाभ्यां नमः ॥ ॐ तन्नो गोपालः कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ॐ प्रचोदयात् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ अथांगन्यासः—ॐ गोपीजनवल्लभाय हृदयाय नमः ॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ ॐ वासुदेवाय

शिखायै वषट् ॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥ ॐ तन्नो गोपालः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ प्रचोदयात् अस्त्राय फट् ॥ अथ गोपालगायत्रीमन्त्रः ॥ ॐ क्लीं गोपालाय गोचराय वंशीशब्दाय नमः ॥ इति गोपालगायत्री ॥ १६ ॥

अथ गोपालगायत्री ।

गोपीजनवल्लभको जानते हैं, वासुदेवका ध्यान करते हैं, वह गोपाल इन्द्रियोंका प्रेरक हमारी बुद्धियोंको सत्कार्यमें प्रेरणा करें । अब करन्यास कहते हैं—गोपीजनवल्लभायसे अंगुष्ठ, विद्महेसे तर्जनी, वासुदेवायसे मध्यमा, धीमहिसे अनामिका, तन्नोगोपालःसे कनिष्ठिका, प्रचोदयात्‌से करतलकरपृष्ठको स्पर्श करे । अब अंगन्यास कहते हैं—गोपीजनवल्लभायसे हृदय, विद्महेसे शिर, वासुदेवायसे शिखा, धीमहिसे कवच, तन्नो गोपालःसे नेत्रत्रय, प्रचोदयात्‌से अस्त्रमुद्रा करे । अब

गोपालगायत्रीमन्त्र कहते हैं--ॐ क्लीं गोपाल गौवोंको चरानेवाले वा प्राणियोंके अन्तःकरणकी वृत्तिको प्रेरणा करनेवाले, वंशीशब्द करनेवालेके निमित्त प्रणाम है ॥ इति गोपालगायत्री ॥ १६ ॥

अथ परशुरामगायत्री ।

ॐ जामदग्न्याय विद्महे ॥ महावीराय धीमहि॥ तन्नः परशुरामः प्रचोदयात् ॥ अथ करन्यासः– ॐ जामदग्न्याय अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ विद्महे तर्जनीभ्यां नमः ॥ ॐ महावीराय मध्यमाभ्यां नमः ॥ ॐ धीमहि अनामिकाभ्यां नमः ॥ ॐ तन्नः परशुरामः कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ॐ प्रचोदयात् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ अथांगन्यासः–ॐ जामदग्न्याय हृदयाय नमः ॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ ॐ महावीराय शिखायै वषट् ॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥ ॐ तन्नः पर

शुरामः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ प्रचोदयात् अस्त्राय फट् ॥ अथ परशुरामगायत्रीमन्त्रः—ॐ रां रां रां परशुरामाय परशुहस्ताय नमः ॥ इति परशुराम-गायत्री ॥ १७ ॥

अथ परशुरामगायत्री ।

जमदग्निकुमारको जानते हैं, अथवा प्रकाशस्व-रूपको जानते हैं, महावीरका ध्यान करते हैं, परशुराम हमारी बुद्धियोंको सत्कार्यमें प्रेरणा करै । अब कर-न्यास कहते हैं--ॐ जामदग्न्यायसे अंगुष्ठ, ॐ विद्म-हेसे तर्जनी,ॐ महावीरायसे मध्यमा, ॐ धीमहिसे अना-मिका, ॐ तन्नः परशुरामःसे कनिष्ठिका, ॐ प्रचो-दयात्से करतलकरपृष्ठ स्पर्श करै । अब अंगन्यास कहते हैं—जामदग्न्यायसे हृदय, विद्महेसे शिर, महा-वीरायसे शिखा, धीमहिसे कवच, तन्नः परशुरामःसे नेत्रत्रय, प्रचोदयात्से अस्त्र प्रयुक्त करे । परशुराम-

गायत्रीमंत्र कहते हैं—ॐ रां रां रां परशुरामाय परशुहस्ताय परशा हाथमें लिये परशुरामके निमित्त प्रणाम है ॥ इति परशुरामगायत्री ॥ १७ ॥

अथ तुलसीगायत्री ।

ॐ तुलसीपत्राय विद्महे ॥ महालक्ष्म्यै धीमहि ॥ तन्नस्तुलसी प्रचोदयात् ॥ अथ करन्यासः—ॐ तुलसीपत्राय अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ विद्महे तर्जनीभ्यां नमः ॥ ॐ महालक्ष्म्यै मध्यमाभ्यां नमः ॥ ॐ धीमहि अनामिकाभ्यां नमः ॥ ॐ तन्नस्तुलसी कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ॐ प्रचोदयात् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ अथांगन्यासः ॥ ॐ तुलसीपत्राय हृदयाय नमः ॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ ॐ महालक्ष्म्यै शिखायै वषट् ॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥ ॐ तन्नस्तुलसी नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ प्रचोदयात् अस्त्राय

फट् ॥ अथ तुलसीगायत्रीमंत्रः-ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं तस्यै तुलस्यै नमः ॥ ॐ आदिनिरंजन शंकरशेष॥ तहाँ दियो तुलसी उपदेश ॥ नरनारायण लागे काम ॥ रामनाम तुलसी प्रणाम ॥ इति तुलसी-गायत्री ॥ १८ ॥

अथ तुलसीगायत्री ।

तुलसीपत्रको जानते हैं, महालक्ष्मीका ध्यान करते हैं, तुलसी हमारी बुद्धियोंको प्रेरणा करे। अब करन्यास कहते हैं-तुलसीपत्रायसे अंगुष्ठ, विद्महेसे तर्जनी, महा-लक्ष्म्यैसे मध्यमा, धीमहिसे अनामिका, तन्नस्तुलसीसे कनिष्ठिका, प्रचोदयात्से करतलकरपृष्ठ स्पर्श करे। अब अंगन्यास कहते हैं-तुलसीपत्रायसे हृदय, विद्महेसे शिर, महालक्ष्म्यैसे शिखा, धीमहिसे कवच, तन्नस्तुलसीसे नेत्र-त्रय स्पर्श करे, प्रचोदयात्से अस्त्र कार्य करे ॥ अब-तुलसीगायत्री कहते हैं-ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं तुलसीके निमित्त

प्रणाम है। आदिनिरञ्जन शंकर शेषजी हैं, यहां तुलसीको उपदेश दिया है, नरनारायणने कहा है, रामनाम और तुलसीको प्रणाम सत्य है ॥ इति तुलसीगायत्री ॥ १८॥

अथ गुरुगायत्री ।

ॐ परब्रह्मणे विद्महे ॥ परमात्मने धीमहि ॥ तन्नो गुरुः प्रचोदयात् ॥ अथ करन्यासः—ॐ परब्रह्मणे अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ विद्महे तर्जनीभ्यां नमः ॥ ॐ परमात्मने मध्यमाभ्यां नमः ॥ ॐ धीमहि अनामिकाभ्यां नमः ॥ ॐ तन्नो गुरुः कनिष्ठिकाभ्यां नमः॥ ॐ प्रचोदयात् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः॥ अथांगन्यासः—ॐ परब्रह्मणे हृदयाय नमः ॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ ॐ परमात्मने शिखायै वषट्॥ॐ धीमहि कवचाय हुम्॥ ॐ तन्नो गुरुः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ प्रचोदयात् अस्त्राय फट् ॥ अथ गुरुगायत्रीमंत्रः—ॐ गुरुपरमात्मने नमः ॥ इति गुरुगायत्री ॥ १९ ॥

अथ गुरुगायत्री ।

ॐ परब्रह्मको जानते हैं, परमात्माका ध्यान करते हैं, वह हृदयका अन्धकार दूर करनेवाले गुरु हमको सत्कार्यमें प्रेरणा करें । अब करन्यास कहते हैं–ॐ परब्रह्मणेसे अंगुष्ठ, विद्महेसे तर्जनी, परमात्मनेसे मध्यमा, धीमहिसे अनामिका, तन्नो गुरुःसे कनिष्ठिका स्पर्श करे, प्रचोदयात्से करतलकरपृष्ठ स्पर्श करे । अब अंगन्यास कहते हैं–परब्रह्मणेसे हृदय, विद्महेसे शिर, परमात्मनेसे शिखा, धीमहिसे कवच, तन्नो गुरुःसे नेत्रत्रय स्पर्श करे, प्रचोदयात्से अस्त्र प्रयुक्त करे । अब गुरुगायत्रीमन्त्र कहते हैं–ॐ गुरुपरमात्माको प्रणाम है ॥ इति गुरुगायत्री ॥ १९ ॥

अथ आकाशगायत्री ।

ॐ आकाशाय विद्महे ॥ नभोदेवाय धीमहि ॥ तन्नो गगनः प्रचोदयात् ॥ अथ करन्यासः–

ॐ आकाशाय अंगुष्ठाभ्यां नमः॥ ॐ विद्महे तर्जनीभ्यां नम ॥ ॐ नभोदेवाय मध्यमाभ्यां नमः ॥ ॐ धीमहि अनामिकाभ्यां नमः ॥ ॐ तन्नो गगनः कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ॐ प्रचोदयात् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः अथांगन्यासः-ॐ आकाशाय हृदयाय नमः ॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ ॐ नभोदेवाय शिखायै वषट् ॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥ ॐ तन्नो गगनः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ प्रचोदयात् अस्त्राय फट् ॥ अथ गगनगायत्रीमन्त्रः-ॐ श्रां श्रीं श्रूं श्रैं श्रौं श्रः ॥ ॐ ग्रां ग्री ग्रूं ॐ आं आं ॐ गगनाय नमः ॥ इत्याकाशगायत्री ॥ २० ॥

अथ आकाशगायत्री।

ॐ आकाशके निमित्त जानते हैं, नभदेवका ध्यान करते हैं, गगन हमारी बुद्धियोंको प्रेरणा करे। अब

करन्यास कहते हैं–ॐ आकाशायसे अंगुष्ठ, विद्महेसे तर्जनी, नभोदेवायसे मध्यमा, धीमहिसे अनामिका, तन्नो गगनःसे कनिष्ठिका स्पर्श करे, प्रचोदयात्‌से करतलकरपृष्ठ स्पर्श करे। अब अंगन्यास कहते हैं–ॐ आकाशायसे हृदय, विद्महेसे शिर, नभोदेवायसे शिखा, धीमहिसे कवच, तन्नो गगनःसे नेत्रत्रय, प्रचोदयात्‌से अस्त्र प्रयुक्त करे। अब गगनगायत्री मन्त्र कहते हैं–ॐ श्रां श्रीं श्रूं श्रैं श्रौं श्रः। ॐ ग्रां ग्रीं ग्रूं ॐ आं आं ॐ गगनदेवको प्रणाम है॥ इत्याकाशगायत्री॥ २०॥

अथ चन्द्रगायत्री।

ॐ क्षीरपुत्राय विद्महे॥ अमृततत्त्वाय धीमहि॥ तन्नश्चन्द्रः प्रचोदयात्‌॥ अथ करन्यासः–ॐ क्षीरपुत्राय अंगुष्ठाभ्यां नमः॥ ॐ विद्महे तर्जनीभ्यां नमः॥ ॐ अमृततत्त्वाय मध्यमाभ्यां नमः॥ ॐ धीमहि अनामिकाभ्यां नमः॥ ॐ

तन्नश्चन्द्रः कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ॐ प्रचोदयात् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ अथांगन्यासः–ॐ क्षीरपुत्राय हृदयाय नमः ॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ ॐ अमृततत्त्वाय शिखायै वषट् ॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥ ॐ तन्नश्चन्द्रः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ प्रचोदयात् अस्त्राय फट् ॥ अथ चंद्र-गायत्रीमंत्रः–ॐ चन्द्रत्त्वा चन्द्रायणि चंद्रेण, कृणोमि शुक्रं शुक्रेण ॥ अमृतममृतेन सग्मे ते गोरस्मे चंद्राणी चंद्ररस्मते मोहोमि स्वाहा ॥ इति चंद्रगायत्री ॥ २१ ॥

अथ चन्द्रगायत्री ।

क्षीरके पुत्रको जानते हैं, अमृततत्त्वका ध्यान करते हैं, वह प्रसन्नता करनेवाले चन्द्र बुद्धिको सुमार्गमें प्रेरणा करे । अब करन्यास कहते हैं–ॐ क्षीरपुत्रायसे अंगुष्ठ, विद्महेसे तर्जनी, अमृततत्त्वायसे मध्यमा, धीमहिसे

अनामिका, तन्नश्चन्द्रःसे कनिष्ठिका, प्रचोदयात्से करतलकरपृष्ठ स्पर्श करे । अब अंगन्यास कहते हैं--ॐ क्षीरपुत्रायसे हृदय, विद्महेसे शिर, अमृततत्त्वायसे शिखा, धीमहिसे कवच, तन्नश्चन्द्रःसे नेत्रत्रय स्पर्श करे, प्रचोदयात्से अस्त्रमुद्रा करे। अब चन्द्रगायत्रीमंत्र कहते हैं--ॐ चन्द्रमादेवता आनन्दके निमित्त शुक्रतेजद्वारा हम तुमको विचारते हैं, अमृतस्वरूप तुमको प्रणाम करते हैं ॥ इति चन्द्रगायत्री ॥ २१ ॥

अथ हंसगायत्री ।

ॐ परमहंसाय विद्महे ॥ महत्तत्त्वाय धीमहि ॥ तन्नो हंसः प्रचोदयात् ॥ अथ करन्यासः--ॐ परमहंसाय अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ विद्महे तर्जनीभ्यां नमः ॥ ॐ महत्तत्त्वाय मध्यमाभ्यां नमः ॥ ॐ धीमहि अनामिकाभ्यां नमः ॥ ॐ तन्नो हंसः कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ॐ प्रचोदयात् करतलकर-

पृष्ठाभ्यां नमः ॥ अथांगन्यासः– ॐ परमहंसाय हृदयाय नमः ॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ ॐ महत्तत्त्वाय शिखायै वषट् ॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥ ॐ तन्नो हंसः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ प्रचोदयात् अस्त्राय फट् ॥ अथ परमहंसगायत्रीमंत्रः—ॐ सोऽहं सोऽहं हंसपरमराजाय स्वाहा॥ॐ॥ इति हंसगायत्री ॥ २२ ॥

अथ हंसगायत्री ।

ॐ परमहंसके निमित्त विचार करते हैं, महत्तत्त्वका ध्यान करते हैं. वह हंसदेव (सोऽहं) हमको शुभकर्मोंमें प्रेरणा करे। अब करन्यास कहते हैं—परमहंसायसे अंगुष्ठ, विद्महेसे तर्जनी, महत्तत्त्वायसे मध्यमा, धीमहिसे अनामिका, तन्नो हंसःसे कनिष्ठिका स्पर्श करे, प्रचोदयात्से करतलकरपृष्ठ स्पर्श करे । अब अंगन्यास कहते हैं--परमहंसायसे हृदय, विद्महेसे शिर, महत्तत्त्वायसे

शिखा, धीमहिसे कवच, तन्नो हंसःसे नेत्रत्रय, प्रचो-
दयात्से अस्त्रप्रयुक्त करै । अब परमहंसगायत्रीमंत्र
कहते हैं- ॐ सोऽहं हंस प्रेमराजके निमित्त स्वाहा ॥
इति हंसगायत्री ॥ २२ ॥

अथ लक्ष्मीगायत्री ।

ॐ लक्ष्मीर्भूर्भुवः विद्महे ॥ सुवः कालकं
धीमहि ॥ ॐ तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ॥ अथ
करन्यासः-ॐ लक्ष्मीर्भूर्भुवः अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥
ॐ विद्महे तर्जनीभ्यां नमः॥ ॐ महालक्ष्मीः मध्य-
माभ्यां नमः ॥ ॐ धीमहि अनामिकाभ्यां नमः ॥
ॐ तन्नो लक्ष्मीः कनिष्ठिभ्यां नमः ॥ ॐ प्रचो-
दयात् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ अथांगन्यासः-
ॐ लक्ष्मीर्भूर्भुवः हृदयायः नमः॥ ॐ विद्महे शिरसे
स्वाहा ॥ ॐ महालक्ष्मीः शिखायै वषट् ॥ ॐ
कालकं कवचाय हुम् ॥ ॐ तन्नो महालक्ष्मीः

नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ प्रचोदयात् अस्त्राय फट् ॥ अथ लक्ष्मीगायत्रीमंत्रः—ॐ क्लीं श्रीं स्वग्लौं श्रीं लक्ष्मीवासुदेवाभ्यां नमः॥ इति लक्ष्मीगायत्री ॥२३

अथ श्रीलक्ष्मीगायत्री ।

ॐ लक्ष्मीर्भूर्भुवःस्वरूपिणीको जानते हैं, सुवः कालकंका ध्यान करते हैं, वह लक्ष्मी हमको सुन्दर कार्योंमें प्रेरणा करे । अब करन्यास कहते हैं–लक्ष्मी-र्भूर्भुवःसे अंगुष्ठ, विद्महेसे तर्जनी, महालक्ष्म्यैसे मध्यमा, धीमहिसे अनामिका, तन्नो लक्ष्मीःसे कनिष्ठिका, प्रचो-दयात्से करतलकरपृष्ठ स्पर्श करे ॥ अब अंगन्यास कहते हैं–ॐ लक्ष्मीर्भूर्भुवःसे हृदय, ॐ विद्महेसे शिर, महालक्ष्मीःसे शिखा, ॐ कालकंसे कवच, तन्नो महा-लक्ष्मीःसे नेत्रत्रय, प्रचोदयात्से अस्त्रप्रयुक्त करे । अब लक्ष्मीगायत्रीका मंत्र कहतेहैं–ॐक्लीं श्रीं स्वग्लौं श्रीं लक्ष्मी वासुदेवके निमित्त प्रणाम है । इति लक्ष्मीगायत्री॥२३॥

अथ गणेशगायत्री ।

ॐ गौरीपुत्राय विद्महे ॥ विघ्नराजाय धीमहि ॥ तन्नो गणेशः प्रचोदयात् ॥ अथ करन्यासः-ॐ गौरीपुत्राय अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ विद्महे तर्जनीभ्यां नमः ॥ ॐ विघ्नराजाय मध्यमाभ्यां नमः ॥ ॐ धीमहि अनामिकाभ्यां नमः ॥ ॐ तन्नो गणेशः कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ॐ प्रचोदयात् करतलकर-पृष्ठाभ्यां नमः । अथांगन्यासः-ॐ गौरीपुत्राय हृदयाय नमः ॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ ॐ विघ्नराजाय शिखायै वषट् ॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥ ॐ तन्नो गणेशः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ प्रचोदयात् अस्त्राय फट् ॥ अथ गणेशगायत्रीमन्त्रः-ॐ ग्रां ग्रीं ॐ ग्रौं ॐ रीं ॐ तिं ॐ घ्नं गौरीपुत्राय नमः ॥ इति गणेशगायत्री ॥ २४ ॥

अथ गणेशगायत्री ।

गौरीपुत्र जो गणोंके अधिपति हैं वा जगत्की संख्याके जाननेवालेको विचारते हैं, विघ्नराजका ध्यान करते हैं, जो विघ्न दूर करनेवालोंके अधिपति हैं वह गणेश हमारी बुद्धियोंको सत्कार्यमें प्रेरणा करें ॥ अब करन्यास कहते हैं–गौरीपुत्रायसे अंगुष्ठ, विघ्नहेसे तर्जनी, विघ्नराजायसे मध्यमा, धीमहिसे अनामिका, तन्नो गणेशःसे कनिष्ठिका, प्रचोदयात्से करतलकरपृष्ठ स्पर्श करे । अब अंगन्यास कहते हैं–ॐ गौरीपुत्रायसे हृदय, विघ्नहेसे शिर, विघ्नराजायसे शिखा, धीमहिसे कवच, ॐ तन्नो गणेशःसे नेत्रत्रय स्पर्श करे, प्रचोदयात्से अस्त्र । गणेशगायत्रीका मन्त्र लिखते हैं–ॐ गां गीं ॐ गौं ॐ रीं ॐ विं ॐ घ्नं गौरीपुत्रके निमित्त प्रणाम है ॥ इति गणेशगायत्री ॥ २४ ॥

अथ गंगागायत्री ।

ॐ गंगायै विद्महे विष्णुपद्यै धीमहि ॥ तन्नो भागीरथी प्रचोदयात् ॥ अथ करन्यासः—ॐ गंगायै अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ विद्महे तर्जनीभ्यां नमः ॥ ॐ विष्णुपद्यै मध्यमाभ्यां नमः ॥ ॐ धीमहि अनामिकाभ्यां नमः ॥ ॐ तन्नो गंगा कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ॐ प्रचोदयात् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ अथांगन्यासः—ॐ गंगायै हृदयाय नमः ॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ ॐ विष्णुपद्यै शिखायै वषट् ॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥ ॐ तन्नो गंगा नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ प्रचोदयात् अस्त्राय फट् ॥ अथ गंगागायत्रीमंत्रः—ॐ ह्रीं श्रीं विष्णुपद्यै सुरनद्यै तुभ्यं नमोनमः ॥ इति गङ्गागायत्री ॥२८॥

इति श्रीवेदसंहितायां वेदोक्तकर्मकाण्डे

गायत्रीप्रकरणं समाप्तम् ॥

अथ गंगागायत्री ।

ॐ श्रीगंगाके निमित्त जानकारी प्राप्त करते हैं, विष्णुपदीको ध्यान करते हैं, वह भागीरथी देवी हमको सत्कार्यमें प्रेरणा करें । अब करन्यास कहते हैं–ॐ गंगायैसे अंगुष्ठ, ॐ विद्महेसे तर्जनी, ॐ विष्णुपद्यैसे मध्यमा, ॐ धीमहिसे अनामिका, ॐ तन्नो गंगासे कनिष्ठिका, ॐ प्रचोदयात्‌से करतलकरपृष्ठ स्पर्श करे । अब अंगन्यास कहते हैं–ॐ गंगायैसे हृदय, विद्महेसे शिर, विष्णुपद्यैसे शिखा, धीमहिसे कवच, तन्नो गंगासे नेत्रत्रय स्पर्श करे, प्रचोदयात्‌से अस्त्र प्रदर्शन करे । अब गंगागायत्रीका मन्त्र कहते हैं–ॐ ह्रीं श्री विष्णुपदी सुरनदी तुभ्यं नमोनमः ॥ इति गंगागायत्री ॥

इति श्रीवेदोक्तकर्मकाण्डे भाषाटीकायां गायत्रीप्रकरणं समाप्तम् ॥

अथ चतुर्विंशतिगायत्रीमुद्राविधिप्रारंभः ।

सम्मुखं संपुटं चैव विततं विस्तृतं तथा ॥ एकमुखं द्विमुखं चैव त्रिमुखं चतुर्मुखं पंचमुखं तथा । षण्मुखाधोमुखं चैव व्यापकाञ्जलिकं तथा ॥ शकटं यमपाशं च ग्रथितं सम्मुखोन्मुखम् ॥प्रलंबं मुष्टिकं चैव मत्स्यकूर्मवराहकम् ॥ सिंहाक्रांतं महाक्रांतं मुद्गरं पल्लवं तथा ॥ एता मुद्राश्चतुर्विंशद्गायत्र्यादौ प्रतिष्ठिताः ॥ एता मुद्रा न जानाति गायत्री निष्फला भवेत् ॥ अथावाहन्याद्येकादशमुद्राः प्रदर्श्यंते ॥ आवाहनी रामस्थापिनी सन्निहेती तथैव च ॥ सन्निरुद्धिः सम्मुखी चावगुंठनी प्रकीर्तिता ॥ शकलीकृता धेनुश्च शंखचक्रगदास्तथा॥ पद्मशार्ङ्गशराश्चैव कौस्तुभो वनमालिका॥ योनिमुद्रा नमस्कार एवमेकादश क्रियन्ते ॥ २ ॥ पुनरष्टौ मुद्राः प्रदर्श्यंते ॥ सुरभिज्ञानवैराग्ये

योनिः कूर्मोऽथ पंकजम् ॥ लिंगं निर्याणमुद्राश्च अष्टौ मुद्राः प्रकीर्त्तिताः ॥ इति मुद्राविधिः संपूर्णः ॥ अथ विसर्जनम्-उत्तरे शिखरे जाता भूम्यां पर्वतवासिनि ॥ ब्रह्मणैवमनुज्ञाता गच्छ देवि यथासुखम् ॥ १ ॥ इति विसर्जनम् ॥

चौबीस गायत्रीकी मुद्रा विधि आरम्भ करते हैं-सम्मुख, संपुट, वितत, विस्तृत, एकमुख, द्विमुख, त्रिमुख, चतुर्मुख, पञ्चमुख, षण्मुख, अधोमुख, व्यापक, अंजलिक, शकट, यमपाश, ग्रथित, सम्मुख, उन्मुख, प्रलम्ब, मुष्टिक, मत्स्य, कूर्म, वराह, सिंहाक्रांत, महाक्रांत, मुद्गर, पल्लव, यह चौबीस गायत्रियोंकी चौबीस मुद्रा हैं, इन मुद्राओंके विना जाने गायत्री निष्फल होती है । आवाहनकी ग्यारह मुद्रा दिखाते हैं-आवाहनी, संस्थापिनी, सन्निहेती, सन्निरुद्धि, सम्मुखी, अवगुंठनी, शकलीकृता, धेनु, शंख, चक्र, गदा, पद्म, शार्ङ्ग, शर, कौस्तुभ, वनमाला, योनिमुद्रा, नमस्कार

ये एकादश मुद्रा हैं। फिर आठ मुद्रा और दिखाई जाती हैं—सुरभि, ज्ञान, वैराग्य, योनि, कूर्म, पंकज, लिंग और निर्याणमुद्रा ये आठ मुद्रा कही हैं। हठ-योगादिमें मुद्राओंका विस्तार देख लेना, यहां विस्तार भयसे नहीं लिखी। यह मुद्राविधि सम्पूर्ण हुई॥ अब विसर्जन—उत्तर शिखरमें प्रगट हुई भूमिमें और पर्वतके ऊपर निवास करनेवाली ब्रह्मद्वारा अनुज्ञात होकर हे देवि! यथासुखसे गमन करो॥ शुभम्॥

इति श्रीमुरादाबादनिवासि—पंडितज्वालाप्रसदमिश्रकृतौ चतु-विंशतिगायत्रीविधानं भाषानुवादसहितं समाप्तम्॥

पुस्तकें मिलने के स्थान

१) खेमराज श्रीकृष्णदास,
श्रीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
खेतवाडी, मुंबई - ४०० ००४.

२) खेमराज श्रीकृष्णदास,
६६, हडपसर इण्डस्ट्रिअल इस्टेट
पुणे - ४११ ०१३.

३) गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास
लक्ष्मीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस,
व बुक डिपो,
अहिल्याबाई चौक, कल्याण
(जि. ठाणे - महाराष्ट्र)

४) खेमराज श्रीकृष्णदास,
चौक - वाराणसी (उ.प्र.)

मुद्रक एवं प्रकाशक:

खेमराज श्रीकृष्णदास

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई - ४०० ००४.

KHEMRAJ SHRIKRISHNADAS